अपनी बात

तिब्बती समुदाय में लोकतंत्र और हुआ मजबूत

तिब्बत के महान् धर्मगुरू परमपावन दलाई लामा ने युवा पीढ़ी को मानवीय मूल्यों से भरपूर होने की सलाह दी है जो कि भविष्य के लिए जरूरी है। अप्रैल 2016 में दिल्ली के कई शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों के बीच अपने आध्यात्मिक प्रवचन में उन्होंने बताया कि शांति, अहिंसा तथा पर्यावरण–संरक्षण एवं नैतिक मूल्यों की मजबूती पर ही संसार का भविष्य है। समाज में इन मूल्यों पर खतरा गंभीर चिंता का विषय है। ऐसी दशा में विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे समाज में स्वस्थ वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे। मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्य मजबूत होंगे तथा संसार में शांति–अहिंसा का वातावरण निष्चित रूप से सुदृढ़ हो सकेगा।

वास्तव में दलाई लामा प्रारम्भ से ही विश्वस्तर पर मानवीय मूल्यों को मजबूत करने हेतु अथक प्रयास कर रहे हैं। चीन द्वारा तिब्बत पर अवैध नियंत्रण कर लेने के बाद वे 1959 में भारत आए और बौद्ध दर्शन में निहित शांति–अहिंसा–करूणा का प्रचार–प्रसार वे तभी से लगातार कर रहे हैं। उन्हें शांति के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। विभिन्न देशों ने उन्हें अपने सर्वोच्च सम्मान प्रदान किए हैं तथा उनके आध्यात्मिक प्रवचन सुने हैं। उनके योगदान को रेखांकित करते हुए तथा उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु वरिष्ठ पत्रकार तथा सम्मानित तिब्बत मित्र विजय क्रांति द्वारा थैंक यू दलाई लामा चित्र प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसे भरपूर सराहना मिली है। इसके उद्घाटन समारोह में तिब्बती संसद के अध्यक्ष पेंपा त्सेरिंग तथा प्रतिनिधि मण्डल ने भी आभारपूर्ण विचार व्यक्त किये। प्रदर्शनी देखने वालों की राय थी कि दलाई लामा जी के प्रति जितनी भी श्रद्धा प्रकट की जाये वह उनके योगदान को देखते हुए कम है।

दलाई लामा तथा नोबेल पुरस्कार से सम्मानित आर्क बिषप डेसमंड टुटू के नेतृत्व में 270 विश्वस्तरीय धर्मगुरूओं द्वारा पर्यावरण–संरक्षण एवं मौसम परिवर्तन संबंधी चिंतन भी एक महत्वूर्ण घटना है। न्यूयार्क में 18 अप्रैल 2016 को उनके संयुक्त बयान में अपील की गई कि 22 अप्रैल को ब्रिटेन में संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा आयोजित सम्मेलन में विश्व के महत्वपूर्ण नेता पर्यावरण से जुड़े सवालों को गंभीरतापूर्वक हल करने का प्रयास करें। प्राकृतिक आपदाओं को रोकने का एकमात्र उपाय यही है कि प्राकृतिक संसाधनों को विनाश से बचाया जाए तथा उनका यथाशक्ति संरक्षण–संवर्धन किया जाए। विश्वस्तरीय धर्मगुरूओं के प्रस्ताव को मिला व्यापक समर्थन सराहनीय है।

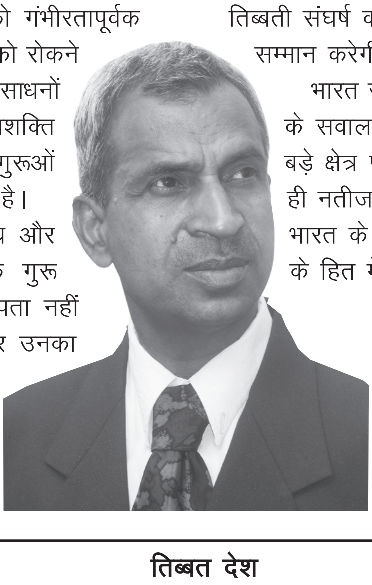

पर्यावरण के साथ ही चिंता का एक विषय और भी है। तिब्बत के दूसरे सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरू पंचेनलामा तथा उनके परिजनों का अब तक पता नहीं चल पाया है। गत 25 अप्रैल को विश्वस्तर पर उनका 27 वाँ जन्म दिवस मनाया गया। ज्ञातव्य है कि चीन सरकार ने पंचेनलामा को तभी गिरफ्तार कर लिया था जब वे केवल छः साल के थे। चीन सरकार द्वारा तिब्बत में मानवाधिकारों का हनन क्रूरतापूर्वक जारी है। पंचेनलामा की गिरफ्तारी इसी का प्रमाण है। सभी तिब्बती एवं तिब्बत समर्थक पंचेनलामा के संबंध में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध कराने हेतु चीन सरकार से मांग कर रहे हैं, जो कि पूर्णतः उचित है।

इसके ठीक विपरीत तिब्बतियों में लोकतांत्रिक आदर्श मजबूत हो रहे हैं। मतदान के जरिए तिब्बती समुदाय ने नए सिरे से निर्वासित तिब्बत सरकार के प्रधानमंत्री का निर्वाचन कर लिया है। पुनः सिक्योंग डॉ. लोबजंग संग्ये दूसरे कार्यकाल के लिए निर्वाचित किए गए हैं। चीन के औपनिवेशिक आधिपत्य में होते हुए भी तिब्बती समुदाय में लोकतंत्र के प्रति अटूट निष्ठा का यह उदाहरण विश्वस्तर पर अनुकरणीय–प्रशंसनीय उदाहरण बना हुआ है। चीन सरकार को भी इससे सीख लेते हुए अपने अलोकतांत्रिक कार्यकलापों को बंद करना चाहिए।

इलाहाबाद के शिवगंगा विद्या मंदिर में लगभग 800 विद्यार्थियों ने तिब्बती एकजुटता रैली का गत अप्रैल माह में आयोजन करके तिब्बती समुदाय की लोकतांत्रिक निष्ठा की सराहना की। उसमें तिब्बत समर्थक भारतीय समूहों के क्षेत्रीय समन्वयक सुन्दरलाल सुमन तथा सारनाथ स्थित केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय के प्रो. रमेश चन्द्र नेगी समेत सभी वक्ताओं का मत था कि परमपावन दलाई लामा के नेतृत्व में केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन का ढाँचा पूर्णतः लोकतांत्रिक हो चुका है। निर्वासन में होते हुए भी उन्होंने तिब्बती प्रशासन का ढाँचा तैयार किया तथा उसे लोकतांत्रिक भी बनाया। तिब्बत में इसी लोकतांत्रिक व्यवस्था को लागू करना है। सभी तिब्बत समर्थक चाहते हैं कि परमपावन दलाई लामा को तिब्बतियों सहित तिब्बत में ससम्मान बुलाया जाये। इससे चीन की अंतरराष्ट्रीय छवि में सुधार होगा। निर्वासित तिब्बत सरकार चीन के संविधान तथा कानून के अंतर्गत तिब्बत को सिर्फ ''वास्तविक स्वायत्तता'' देने की मांग कर रही है। इससे चीन की एकता–अखंडता को कोई खतरा नहीं है। इस मांग की पूर्ति हेतु चीन के संविधान में बदलाव भी नहीं लाना होगा। तिब्बती संघर्ष को बढ़ते जा रहे विश्वव्यापी समर्थन का चीन सरकार सम्मान करेगी, ऐसी आशा सभी तिब्बत समर्थकों की है।

भारत सरकार को चाहिए कि वह भारत–चीन वार्ता में तिब्बत के सवाल को जरूर उठाये। चीन 1962 से ही भारत के एक बड़े क्षेत्र पर अवैध कब्जा किए हुए है। तिब्बत की गुलामी का ही नतीजा है कि तिब्बत की जमीन का इस्तेमाल चीन सरकार भारत के खिलाफ कर रही है। तिब्बत समस्या का हल भारत के हित में है। ◆

प्रो0 श्यामनाथ मिश्रा
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
खेतड़ी (राज.)
मो.–9829806065, 8764060406
E-mail & Facebook :- shyamnathji@gmail.com

दलाई लामा को वर्ल्ड सोशल एंटरप्रेन्योरियल फोरम ने दिया ग्लोबल ट्रेजर अवॉर्ड

(तिब्बतनरीव्यू डॉट नेट, 22 अप्रैल)

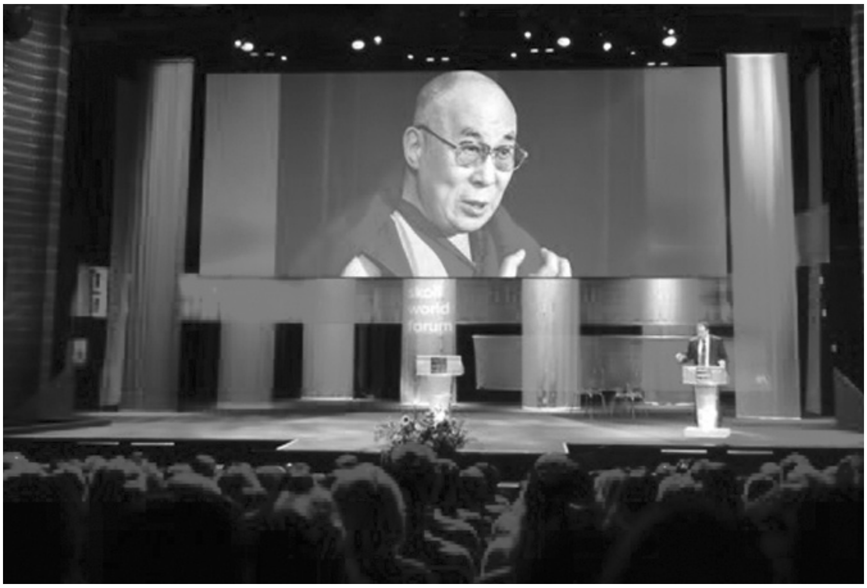

14 अप्रैल 2016 को बिजनेस स्कूल, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, इंग्लैंड में परम पावन दलाई लामा को स्कॉल विश्व मंच द्वारा वैश्विक ट्रेजर अवार्ड से सम्मान किया।

ब्रिटेन स्थित एक फाउंडेशन ने गत 14 अप्रैल को दलाई लामा को वर्ष 2016 का ग्लोबल ट्रेजर अवॉर्ड दिया। दुनिया की सबसे जटिल समस्याओं के लिए उद्यमी रवैए और समाधान को आगे बढ़ाने के लिए दलाई लामा को यह अवॉर्ड दिया गया है। परमपावन को यह अवॉर्ड इसलिए दिया गया कि उन्होंने 'औरों से ज्यादा प्रखरता से करुणा की भावना लोगों को समझाया है' जो कि स्कॉल ग्लोबल ट्रेजर द्वारा प्रायोजित स्कॉल वर्ल्ड फोरम का भी केंद्रबिंदु है।

परमपावन की तरफ से उत्तर यूरोप में परमपावन दलाई लामा के प्रतिनिधि लंदन में रहने वाले श्री छोनफेल त्सेरिंग ने यह सम्मान स्वीकार किया। उनके साथ इस अवॉर्ड समारोह में परमपावन के पर्सनल डॉक्टर और बौद्ध भिक्षु डॉ. बैरी माइकल केरजिन भी शामिल हुए। यह अवॉर्ड समारोह ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के एसएआइडी बिजनेस स्कूल में आयोजित किया गया।

स्कॉल फाउंडेशन के संस्थापक चेयरमैन जेफ स्कॉल ने इस अवसर पर कहा, "इस साल मंच ने प्रखर करुणा की भावना का अन्वेषण किया। हमें यह उम्मीद थी कि अपना ग्लोबल ट्रेजर अवॉर्ड किसी ऐसे व्यक्ति को देंगे जिसने करुणा की भावना को समझाने का अतुलनीय कार्य किया हो।"

परमपावन को लाखों लोगों की प्रेरणा बताते हुए स्कॉल के चेयरमैन ने उनकी इस बात के लिए तारीफ की कि वह गर्मजोशी और आर्थिक व्यवस्था में नैतिक मूल्यों को समाहित करने को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने दलाई लामा के संदेश और बुद्धिमत्ता को सबसे उपयुक्त और सबसे प्रभावी सामाजिक उद्यमिता बताते हुए उनकी पुस्तक 'द लीडर्स वे : द आर्ट ऑफ मेकिंग द राइट डिसीजंस इन ऑवर करियर्स, कंपनीज एंड ऑवर वर्ल्ड ऐट लार्ज' से उद्धरण देते हुए कहा : 'किसी लीडर का लक्ष्य यह होना चाहिए कि कोई संगठन मजबूत और गर्मजोशी वाले हृदय के साथ करें और चीजों को उसी तरह से देखें वे जिस तरह से हैं।'

फोरम को लिखे एक व्यक्तिगत पत्र में दलाई लामा ने इस बात के लिए क्षमा मांगी है कि वह इस अवॉर्ड समारोह में शामिल नहीं हो पाए। इससे पहले यह अवॉर्ड आर्क बिशप टुटु, मलाला युसूफजई और ग्रैका मैशल को दिया जा चुका है।

फोरम का लक्ष्य दुनिया के प्रमुख सामाजिक उद्यमियों के असर को तेज करना है, उन्हें सीखने, परिस्थिति का फायदा उठाने और बड़े पैमाने के सामाजिक बदलावों के सामूहिक अनुसरण के लिए जरूरी साझेदारों के साथ एकीकृत कर। इसके प्रतिनिधि 65 देशों से आए थे और वे कई तरह की संवादात्मक गतिविधियों में शामिल हुए जिसमें प्रतिनिधियों ने सामाजिक उद्यमिता के बारे में खुलकर जानकारी साझा की, गठजोड़ किया, नवप्रर्वतन किया और आखिरकार उसे आगे बढ़ाया। ◆

तिब्बती प्रदर्शनकारियों को रिहा करने से पहले पुलिस ने जमकर पीटा

(तिब्बतनरीव्यू डॉट नेट, 17 अप्रैल, 2016)

तिब्बत के गांसू प्रांत में स्थित माछू काउंटी में निचले स्तर की सरकारी नौकरियों से अनुचित तरीके से बर्खास्त कर देने का 8 अप्रैल को विरोध कर रहे तिब्बतियों के एक समूह को चीनी पुलिस ने बुरी तरह से पीटा और उनका सारा सामान लूट लिया। उन्हें दो दिन बाद रिहा किया गया। रेडिया फ्री एशिया की तिब्बती सेवा ने 12 अप्रैल को एक सूत्र के हवाले से यह खबर दी है।

करीब 30 की संख्या में सभी ग्रेजुएट तिब्बती वन विभाग सहित कई सरकारी विभागों में निचले स्तर के पदों पर तीन–चार साल से नौकरी कर रहे थे। काउंटी सरकार ने महज एक नोटिस देकर उनके रोजगार को खत्म कर दिया, जिसमें यह कहा गया कि उनके पास अपनी नौकरी के लिए सही योग्यता नहीं है। हालांकि उनकी जगह पर जिन लोगों की भर्ती की गई उनमें से ज्यादातर के पास या तो बहुत कम क्वालिफिकेशन है–कुछ ने तो प्राइमरी स्तर तक ही शिक्षा हासिल की है–या वह दूसरे इलाकों से आए हैं। इसमें बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और घूसखोरी होने के आरोप लगाए जा रहे हैं। खिन्न तिब्बतियों ने काउंटी के सरकारी कार्यालयों के बाहर प्रदर्शन करते हुए अपनी नौकरियों की बहाली की मांग की। प्रशासन ने इसके जवाब में पुलिस भेज दिया, जो उन्हें पकड़कर काउंटी के हिरासत केंद्र लेकर गए और वहां तिब्बतियों की उन्होंने जमकर पिटाई की, उनके मोबाइल फोन और सोने की अंगूठी जैसे अन्य सामान भी छीन लिए।

यह विरोध प्रदर्शन दो समूहों द्वारा किए गए, दूसरे समूह ने पहले समूह के समर्थन में विरोध प्रदर्शन 9 अप्रैल को किया। बाद में पुलिस ने हिरासत में लिए गए लोगों के मां–बाप को बुलाया और उनकी जिम्मेदारी पर सभी कैद लोगों को रिहा किया गया। अभिभावकों को यह चेतावनी दी गई कि उनके बच्चे इस विरोध प्रदर्शन के बारे में कोई भी जानकारी या तस्वीर अपने मोबाइल फोन से कहीं प्रसारित नहीं करेंगे, अन्यथा उन्हें तीन से चार साल के लिए जेल में ठूंस दिया जाएगा।

प्रदर्शनकारियों ने पहले तो जेल से बाहर जाने से ही इंकार कर दिया था, उनकी मांग थी कि काउंटी सरकार उनके विरोध प्रदर्शन को दमित करने और उन्हें हिरासत में रखने तथा पिटाई करने की वजह बताए। वे इसके लिए मुआवजा देने की भी मांग कर रहे थे। उनसे कहा गया कि वे बाद में काउंटी के अधिकारियों से मिलकर अपनी समस्याएं और मांग रख सकते हैं। ◆

निवार्सित तिब्बतियों के हालिया चुनावों के बारे में ऑनलाइन चैट करने वाले तीन तिब्बतियों को चीन ने हिरासत में लिया

(तिब्बतनरीव्यू डॉट नेट, 2 अप्रैल)

चीनी प्रशासन ने ऐसे तीन तिब्बतियों को गिरफ्तार कर लिया है जो हाल में निर्वासित तिब्बती आम चुनाव के बारे में चीन की माइक्रो मैसेजिंग ऐप वीचैट पर एक ग्रुप चर्चा में शामिल हुए थे। 30 मार्च को क्विंघई प्रांत के गोलोक प्रशासनिक क्षेत्र के माटोए से गिरफ्तार इन लोगों में दो मर्द और एक औरत हैं।

इन तीनों लोगों के नाम सामधुप (40 साल से ऊपर), रोंगशार (29) और ल्हादोन है। पुलिस सुबह करीब 10 बजे छुगो टाउनशिप में स्थित उनके देसार गांव से उन्हें लेकर गई। कहा जा रहा है कि वे लोग जिस ग्रुप चर्चा में शामिल हुए थे, उसमें देश से बाहर के भी कई सदस्य जुड़े हुए हैं।

बताया जाता है कि इन तीनों लोगों को काउंटी के कारागार में रखा गया है, जहां उन्हें किसी से भी, उनके परिजनों से भी, मिलने नहीं दिया जा रहा है। सामधुप गांव की बस्ती संख्या 1,3 और 5 के उप्र प्रधान हैं जिनमें करीब 140 मकान हैं। इसके पहले कई साल तक वह बस्ती संख्या 6 के प्रधान रह चुके हैं। ल्हादोन 8 और 11 साल के दो बच्चों की मां हैं, जबकि रोंगशार भी शादीशुदा हैं और उनकी पत्नी का नाम यांगक्यी है। ◆

केरल के अग्निकांड पीड़ितों को दलाई लामा ने 10 लाख रुपए की मदद की

(एनडीटीवी, 13 अप्रैल, 2016, तिरुअनंतपुरम)

दलाई लामा ने केरल के कोल्लम में एक मंदिर में लगी आग से प्रभावित लोगों की मदद के लिए 10 लाख रुपए दान देने की घोषणा की है। यह राशि पीड़ितों के राहत और पुनर्वास के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। कोल्लम के एक मंदिर में लगी भीषण आग से 110 से ज्यादा लोग मारे गए और 350 से ज्यादा लोग घायल हो गए थे।

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित तिब्बती बौद्ध गुरु ने रविवार को परावुर के पुत्तिंगल देवी मंदिर में लगी आग के बाद केरला के मुख्यमंत्री राहत कोष में यह दान दिया। तिरुअनंतपुरम में जारी एक बयान में मुख्यमंत्री ओमेन चांडी ने कहा कि दलाई लामा ने एक पत्र लिखकर राहत और पुनर्वास कार्यों के बारे में संतुष्टि जारी की है। ◆

दलाई लामा के 80वें जन्म वर्ष के अवसर पर फोटो प्रदार्शनी का आयोजन

(तिब्बतनरीव्यू डॉट नेट, 11 अप्रैल)

10 अप्रैल 2016 को आल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफट्स सोसाइटी नई दिल्ली में आयोजित "धन्यवाद दलाई लामा" फ़ोटो प्रदर्शनी को देखते हुए परम पावन दलाई लामा।

निर्वासित तिब्बती आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा को विशिष्ट तरीके से शुभकामना देने के लिए, उनके 80 साल का होने पर और तिब्बत, भारत तथा शेष दुनिया में योगदान के लिए, वरिष्ठ भारतीय पत्रकार और दशकों से तिब्बत संघर्ष के प्रेक्षक रहे श्री विजय क्रांति ने 7 अप्रैल को एक हफ्ते लंबे प्रदर्शनी की शुरुआत की। 'धन्यवाद दलाई लामा' शीर्षक से आयोजित इस प्रदर्शनी का आयोजन नई दिल्ली के संसद भवन के सामने स्थित अखिल भारतीय ललित कला एवं शिल्प समाज (एआइएफएसीएस) में किया गया। इस प्रदर्शनी में 10 अप्रैल को दोपहर को दलाई लामा भी आए। उनके साथ भाजपा के महासचिव रामलाल और स्तंभकार एवं राज्यसभा सांसद बलबीर पुंज भी थे।

इस प्रदर्शनी में करीब 300 फोटोग्राफ और 1000 चित्रों पर आधारित स्लाइड शो का प्रदर्शन किया गया। श्री विजय क्रांति ने बताया कि इन सबसे दलाई लामा और भारत में तिब्बती सभ्यता के पुनर्जन्म का एक तरह का चित्र अध्ययन हो जाता है।

श्री विजय क्रांति ने कहा कि यह प्रदर्शनी एक शांतिप्रिय और बहादुर शरणार्थी समुदाय की सफलता की कहानी, उनके भिक्षु गुरु दलाई लामा और उनके उदार मेजबान भारत के लोग एवं भारत सरकार, के प्रति उनके द्वारा जीवन भर की मेहनत से तैयार एक दृश्य सम्मान है।

इसके पूर्व प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भाजपा नेता श्री बलबीर पुंज ने कहा, "यह फोटो प्रदर्शनी तिब्बत की यादों को प्रदर्शित करती है और उसकी संस्कृति के संरक्षण में मदद करती है। श्री विजय ने तिब्बत के इतिहास और वहां के राजनीतिक हालात के बारे में दुनिया को बताकर एक प्रशंसनीय काम किया है।"

श्री विजय के लिए यह प्रदर्शनी पांच साल के विशाल फोटो प्रदर्शनी की एक श्रृंखला का समापन था, जो मार्च 2011 में स्पेन के शहर बार्सिलोना में 'बुद्धा होम कमिंग' (बुद्ध की घर वापसी) थीम के तहत शुरू हुई थी। इसके बाद यह प्रदर्शनी नई दिल्ली, चंडीगढ़ और सिडनी में आयोजित की गई थी।

दिल्ली के इस अंतिम प्रदर्शनी का अवलोकन करने वाले लोगों में निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर श्री पेनपा त्सेरिंग, डिप्टी स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल और निर्वासित संसद के दो और सदस्य शामिल थे। इसकी साज–सज्जा प्रख्यात फैशन फोटोग्राफर श्री अक्षत क्रांति महाजन ने की थी। ◆

तिब्बत में वर्ष 2015 में मानवाधिकारों की स्थिति और बदतर हुई : अमेरिकी रिपोर्ट

(तिब्बतनरीव्यू डॉट नेट, 15 अप्रैल, 2016)

राष्ट्रपति शी जिनपिंग के शासन के तीसरे वर्ष 2015 में चीन में मानवाधिकारों की स्थिति और बदतर हुई है और खासकर सीक्यांग और तिब्बत में हालत बेहद खराब रही है। अमेरिका के विदेश विभाग ने 13 अप्रैल को जारी अपने नवीनतम सालाना वैश्विक मानवाधिकार रिपोर्ट में यह जानकारी दी है।

इस रिपोर्ट में 'तिब्बत की विशिष्ट धार्मिक, सांस्कृतिक और भाषाई विरासत के गंभीर दमन' तथा 'तिब्बत पठार के गहन सैन्यीकरण' का हवाला दिया गया है। तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र (टीएआर) और तिब्बती स्वायत्तशासी प्रशासनिक क्षेत्र (टीएपी) और अन्य काउंटियों को चीन का हिस्सा मानने की अमेरिकी नीति पर ही जोर देते हुए इस रिपोर्ट में कहा गया है, "टीएआर और अन्य तिब्बती इलाकों में सरकार द्वारा मानवाधिकारों का सम्मान और सुरक्षा की स्थिति बहुत खराब है।"

रिपोर्ट में कहा गया है, "सीमा क्षेत्रों पर नियंत्रण, सामाजिक स्थिरता को बनाए रखने और अलगाववाद से निपटने के दिखावे के लक्ष्य के तहत सरकार तिब्बतियों के विशिष्ट धार्मिक, सांस्कृतिक और भाषाई विरासत का गंभीरता से दमन कर रही है।

रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2015 के दौरान सात तिब्बतियों ने आत्मदाह कर लिया है, जो कि वर्ष 2012 में हुए 83 आत्मदाह विरोध प्रदर्शनों के मुकाबले बहुत कम संख्या है। लेकिन मीडिया में आई खबरों के मुताबिक, "प्रशासन की बेहद सख्त सुरक्षा व्यवस्था और आत्मदाह करने वाले लोगों के परिजनों और परिचितों को सामूहिक रूप से दंडित करने" की वजह से इस संख्या में गिरावट आई है।

सालाना मानवाधिकार रिपोर्ट में तिब्बत के खंड को एक अलग खंड में दिया जाता है, जैसा कि कांग्रेस ने वर्ष 2002 में निर्णय लिया था। वाशिंगटन स्थित इंटरनेशनल कैम्पेन फॉर तिब्बत ने बताया कि वाशिंगटन में होने वाली कांग्रेस की चीन पर कार्यकारी आयोग की बैठक में भी तिब्बत में मानवाधिकार की स्थिति पर चर्चा होगी। जिसमें तिब्बती भिक्षु और पूर्व राजनीतिक कैदी गोलोग जिग्मे की गवाही भी होगी।

सीक्यांग के मामले में रिपोर्ट में कहा गया है कि इस क्षेत्र में हुई तमाम हिंसक घटनाओं में बहुत से लोगों की मौतें हुई हैं। रिपोर्ट के अनुसार, "इन घटनाओं के लिए सरकारी अमला आमतौर पर 'आतंकवादियों', 'अलगाववादियों' और 'धार्मिक अतिवादियों' को जिम्मेदार ठहरा देता है और इन्हें समुदाय के लोगों या सुरक्षा कर्मियों पर 'हिंसक आतंकवादी हमला' बता दिया जाता है। लेकिन मानवाधिकार संगठनों ने यह बात दोहराई है कि सुरक्षा बल अक्सर अपने घरों मैं बैठे या पूजा–नमाज पढ़ रहे लोगों पर गोलीबारी कर देते हैं।"

समूचे चीन की बात करें तो रिपोर्ट के अनुसार वहां का पहले से ही खराब रहा मानवाधिकार रिकॉर्ड और बदतर हुआ है। वकीलों, एक्टिविस्ट और ब्लॉगर्स पर वर्ष 2015 में लगातार सख्त कार्रवाइयां हुई हैं, इस साल में बीजिंग के अत्याचारपूर्ण और गैरकानूनी प्रवर्तन दस्तूर सीमापार हांगकांग और थाइलैंड तक देखे गए हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2015 में सीक्यांग उइगर स्वायत्त क्षेत्र (एक्सयूएआर) और तिब्बती इलाकों में बहुत कठोर नीतियां अपनाई गईं तथा लोगों की आवाजाही और संचार पर भारी अंकुश लगाए गए। इन इलाकों में अलगाववाद की किसी भी आशंका को ध्वस्त करने के लिए बीजिंग बेहद सख्ती से पेश आता है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि कानूनी पेशे के खिलाफ सख्ती, जिसका बढ़ता महत्व चीन में जनाधिकारों की तस्वीर में इसके पहले इतने चमकते रंगों में नहीं देखा गया था, के तहत "सैकड़ों वकीलों और उनके सहयोगियों से पूछताछ की गई है, जांच की गई है और कई मामलों में उन्हें बिना किसी आरोप के गुप्त ठिकानों पर बंद कर दिया गया है और उनके वकीलों तथा परिवार के सदस्यों को भी उनसे मिलने नहीं दिया जा रहा है।"

आधिकारिक दंडमाफी के प्रावधानों का हवाला देते हुए रिपोर्ट में कहा गया है, "प्रशासन ने अतिरिक्त कानूनी प्रावधानों का सहारा लिया है, जैसे जबरन गायब कर देना और कठोर नजरबंदी, परिवार के लोगों की नजरबंदी ताकि जनता में आलोचना की लहर को रोका जा सके।"

रेडियो फ्री एशिया की 13 अप्रैल की खबर के अनुसार विदेश विभाग की सालाना रिपोर्ट में, हालांकि इस रिपोर्ट को बीजिंग ने सिरे से खारिज किया है, सकारात्मक बातों की भी चर्चा की जाती है, लेकिन वर्ष 2015 में अच्छी खबरों का भारी अभाव रहा है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि शी के अभियान चलाने के बावजूद, "भ्रष्टाचार बड़े पैमाने पर बना हुआ है, सरकार द्वारा भारी नियंत्रित कई इलाकों में भी भ्रष्टाचार के कई मामले सामने आए हैं, जैसेः जमीन के इस्तेमाल बदलने के अधिकार, रियल एस्टेट, माइनिंग और बुनियादी ढांचा विकास, जिनमें जालसाजी, घूसखोरी और बेइमानी होने की आशंका जताई जा रही है। ◆

पंचेन लामा
को उनके 27वें जन्मदिन पर याद किया गया

(तिब्बतनरीव्यू डॉट नेट, 27 अप्रैल, 2016)

चीनी शासन के तहत अपनी मातृभूमि में तो तिब्बती इसकी बात भी नहीं कर सकते हैं, लेकिन निर्वासन में रहने वाले तिब्बतियों ने 25 अप्रैल को 11वें पंचेन लामा गेधुन छोक्यी निमा का 27वां जन्मदिन मनाया। पंचेन लामा तिब्बत की दूसरी सबसे प्रमुख धार्मिक हस्ती हैं। चीन सरकार ने उन्हें उनके परिवार के साथ 17 मई 1995 को उठा लिया था, दलाई लामा द्वारा छह साल के इस बालक को अधिकृत रूप से दसवां पंचेन लामा घोषित करने के तीन दिन बाद ही।

कर्नाटक राज्य के बयालकुप्पी तिब्बती बस्ती के टाशी ल्हुनपो मठ में तिब्बत के यारलुंग वंश के 33वें शासक सांगत्सेन गाम्पो की एक मूर्ति का अनावरण किया गया, जिन्होंने सातवीं शताब्दी में शासन किया था।

बताया जाता है कि यह 10वें पंचेन लामा की अंतिम इच्छा थी कि तिब्बत के सबसे शक्तिशाली प्राचीन राजा की मूर्ति तिब्बत की राजधानी ल्हासा में स्थापित किया जाए। पंचेन लामा की 1989 में मौत हो गई थी।

धर्मशाला में तिब्बती युवा कांग्रेस और तिब्बती महिला संघ की स्थानीय शाखाओं ने इस अवसर पर संयुक्त रूप से केक काटकर दिन की शुरुआत की और एक हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया।

दुनिया को यह नहीं पता है पंचेन लामा जिंदा भी हैं या नहीं और जिंदा हैं तो कहां, किस हाल में हैं? और दलाई लामा के पहचाने जाने के बाद से वह कहां हैं, क्या कर रहे हैं?

तिब्बती महिला संघ की अध्यक्ष डोलमा यांगछेन ने कहा, "आज उनके 27वें जन्मदिन पर हम चीन सरकार से आग्रह कर रहे हैं कि उनके बारे में पारदर्शी जानकारी दे।"

पंचेन लामा कहां हैं यह जानकारी देने और उन्हें रिहा करने की मांग को लेकर महिला संघ ने एक हस्ताक्षर अभियान चलाया। पहले चीन ने दावा किया था कि पंचेन लामा जिंदा हैं और ठीक से हैं, तथा वह नहीं चाहते हैं कि उन्हें परेशान किया जाए। चीन ने वरिष्ठ संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार अधिकारियों और अन्य लोगों के इस अनुरोध को सिरे से खारिज किया है कि उन्हें पंचेन लामा से मिलने दिया जाए।

दलाई लामा और पंचेन लामा ऐतिहासिक रूप से तिब्बत में धार्मिक एवं राजनीतिक सत्ता के लिए एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते रहे हैं। अपने पुनर्जन्म चुनने की गोपनीय प्रक्रिया पर नियंत्रण रखना सामरिक एवं नस्लीय रूप से विशिष्ट तिब्बती पठार पर राजनीतिक वैधता हासिल करने की कुंजी है।

जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी 1949 में मुख्य भूमि चीन में सत्ता में आई, तो दसवें पंचेन लामा और मौजूदा दलाई लामा, दोनों किशोर थे। जब चीनी जन मुक्ति सेना ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया तो दलाई लामा 1959 में हिमालय को पार कर भारत आ गए। दसवें पंचेन लामा तिब्बत में ही टिके रहे।

वर्ष 1962 में समूचे तिब्बत का एक दौरा करने के बाद पंचेन लामा ने तत्कालीन प्रधानमंत्री चाउ एनलाई को संबोधित कर एक पत्र लिखा था, जिसमें तिब्बत में चीन जनवादी गणराज्य की दमनकारी नीतियों और कार्यों की आलोचना की गई। यह 70,000 कैरेक्टर पेटिशन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह "तिब्बत में चीन की नीतियों के बारे में सबसे विस्तृत और जानकारीपरक हमला था।"

पंचेन लामा इस याचिका पर चर्चा करने के लिए चाउ एनलाई से भी मिले। उनकी शुरुआती प्रतिक्रिया तो सकारात्मक थी, लेकिन अक्टूबर 1962 में जनसंख्या के मामले देखने वाले पीआरसी के अधिकारियों ने इस याचिका की आलोचना की। यहां तक कि चेयरमैन माओ ने भी इस याचिका को "प्रतिक्रियावादी सामंती जमींदारों द्वारा फेंका गया जहरबुझा तीर" बताया।

दशकों तक इस याचिका की विषयवस्तु को छिपाकर रखा गया और इसके बारे

में चीनी नेतृत्व में सिर्फ उच्च स्तर के लोगों को ही पता था, लेकिन 1996 में इसकी एक कॉपी लीक हो गई। जनवरी 1998 में दसवें पंचेन लामा के 60वें जन्म दिन के अवसर पर तिब्बत विशेषज्ञ रॉबर्ट द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित इसका संस्करण प्रकाशित किया गया जिसका शीर्षक था : 'अ प्वाइजन्ड ऐरो : द सीक्रेट रिपोर्ट ऑफ द टेन्थ पंचेन लामा'।

वर्ष 1964 में पंचेन लामा को पोलित ब्यूरो की एक बैठक में सार्वजनिक तौर पर अपमानित किया गया, उन्हें सभी सरकारी पदों से हटा दिया गया और 'तिब्बती जनता का शत्रु' घोषित किया गया। उनके दस्तावेज को जब्त कर उनके खिलाफ इस्तेमाल किया गया और आखिरकार उन्हें जेल में डाल दिया गया। तब वह महज 26 साल के थे। अक्टूबर 1977 में उन्हें रिहा कर दिया गया, लेकिन 1982 तक बीजिंग में नजरबंद रखा गया और आखिरकार 1989 में तिब्बत में उनकी मौत हो गई।

वर्ष 1995 में चीनी द्वारा नियुक्त अधिकारियों ने एक दूसरे बच्चे ग्यालत्सेन नोर्बू को 11वां पंचेन लामा घोषित किया, जो कि फिलहाल बीजिंग में रहते हैं और उन्हें समय–समय पर तिब्बत इलाके के दौरे पर ले जाया जाता है। हालांकि तिब्बती जनता उन्हें असली पंचेन लामा नहीं मानती। ◆

गेदुन छोक्यी निमा

- दलाई लामा ने 14 मई 1995 को इन्हें 11वां पंचेन लामा घोषित किया
- इस घोषणा के तीन दिन के भीतर ही चीनी अधिकारी उन्हें उठा ले गए
- तबसे चीन ने इस बारे में बहुत कम जानकारी दी है कि वे कहां और कैसे हैं–चीन का कहना है कि उन्हें 'अलगाववादियों द्वारा अपहरण' से बचाने के लिए ऐसा करना जरूरी है
- उन्हें किसी विदेशी प्रतिनिधि से नहीं मिलने दिया जाता, चीन का कहना है कि उन्होंने स्कूली पढ़ाई पूरी कर ली है और अब चीन में एक सामान्य जीवन जी रहे हैं
- चीन का कहना है कि उनके मां–बाप दोनों को सरकारी नौकरी दी गई है और उनके भाई–बहन नौकरी या पढ़ाई कर रहे हैं

ग्यालत्सेन नोर्बू

- जब वह छह साल की उम्र के थे, तभी चीन ने उन्हें पंचेन लामा का .अवतार घोषित किया
- वह कम्युनिस्ट पार्टी के दो सदस्यों की संतान हैं
- तिब्बत में बौद्ध धर्म की पढ़ाई के लिए लौटने से पहले उन्होंने अपना बचपन बीजिंग में गुजारा है
- वे मुख्य भूमि चीन से बाहर पहली बार सार्वजनिक तौर पर तब सामने आए जब उन्होंने अप्रैल 2012 में हांगकांग में 1,000 से ज्यादा भिक्षुओं को संबोधित किया।
- उन्हें तिब्बती जनता ने असली पंचेन लामा स्वीकार नहीं किया है

तमाम चुनौतियों के बावजूद भारत एक मजबूत देश है : दलाई लामा

एनडीटीवी की दलाई लामा से खास बातचीत
(एनडीटीवी, 7 अप्रैल, 2016)

दुनिया के सबसे सम्मानित गुरूओं में से एक, नोबेल शांति पुरस्कार विजेता दलाई लामा ने एनडीटीवी से खास बातचीत की। पेश है उनसे हुई पूरी बातचीत का पूरा स्क्रिप्ट :

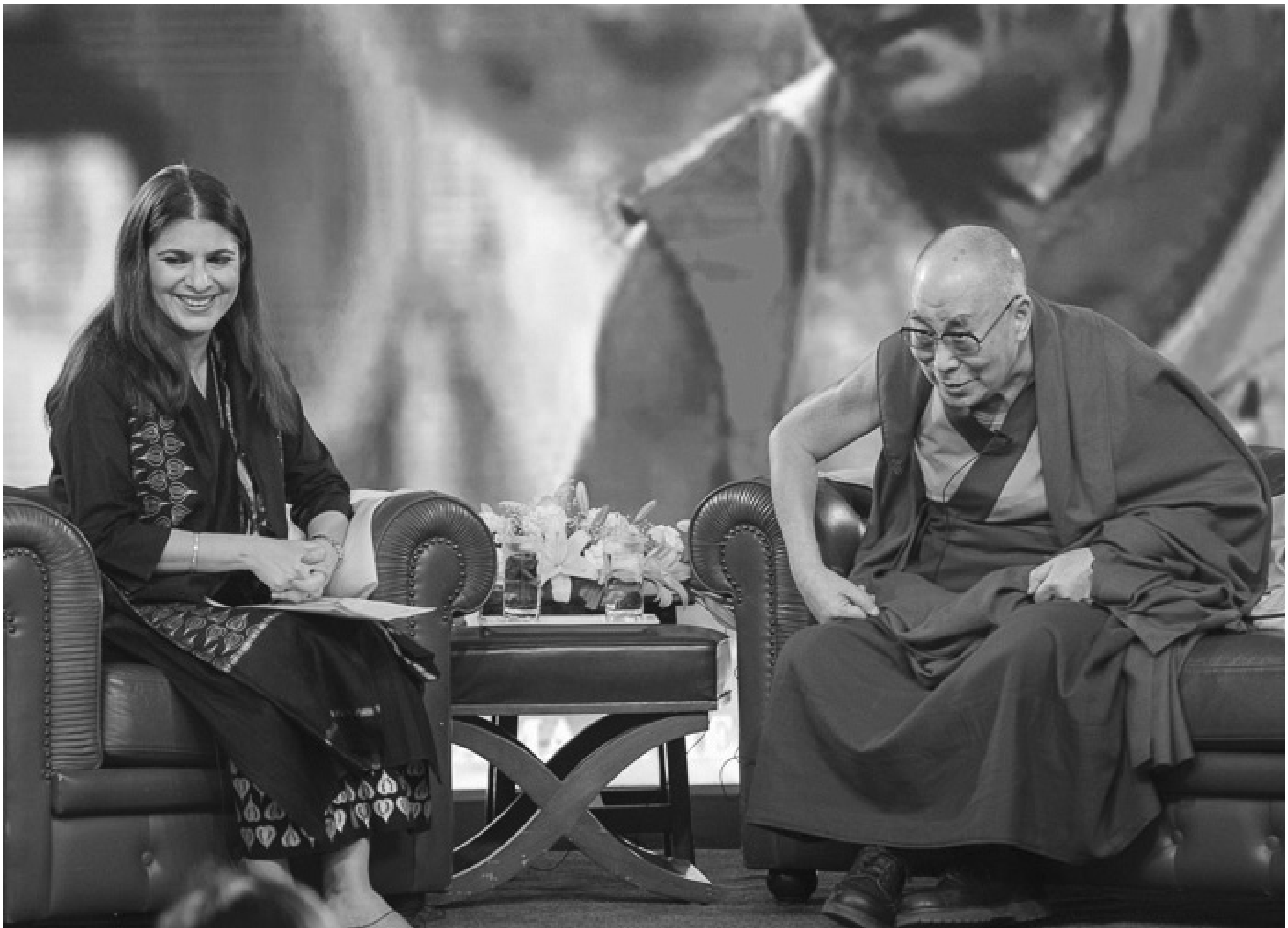

एनडीटीवी संवादों की टेप के दौरान परम पावन दलाई लामा और प्रस्तुतकर्ता सोनिया सिंह, नई दिल्ली, भारत अप्रैल 7, 2016।

एनडीटीवी : आप इस साल में 80 वर्ष की उम्र के हो रहे हैं, जब हम दुनिया भर में हिंसा को बढ़ते हुए देख रहे हैं। आतंकवाद को एक साझा खतरे के रूप में देखा जा रहा है, इसका शिकार चाहे भारत हो या जैसा कि हम पाकिस्तान के लाहौर या ब्रसेल्स, अंकारा में भी देख चुके हैं, क्या आप अब भी दुनिया में शांति बने रहने को लेकर आशान्वित हैं? बौद्ध धर्म ने दुनिया भर में शांति का प्रचार किया, अब आप ऐसे समय में विश्व शांति का प्रचार कैसे करेंगे?

परमपावन : क्योंकि मैं यह सोचता हूं कि पिछले 30 वर्षों में मैं इसे लेकर गंभीर हूं, वैज्ञानिकों, कुछ शिक्षाविदों और अन्य ज्ञानी लोगों से चर्चाएं की हैं। कई मौकों पर वैज्ञानिकों ने यह ध्यान दिलाया है कि मानव का स्वभाव ज्यादा करुणा वाला है। वे कई वजह बताते हैं, जिन्हें मैं यहां दोहराने नहीं जा रहा। अब मैं वास्तव में इस बात से राजी हूं कि मानव के बुनियादी स्वभाव में ज्यादा करुणा है, इसलिए मुझे उम्मीद है। बुनियादी स्वभाव यदि गुस्से या नकारात्मक भावनाओं का होता तो कोई उम्मीद नहीं होती। और निश्चित रूप से मैं एक बौद्ध हूं। इसलिए बौद्ध साहित्य, खासकर नालंदा परंपरा कहती है कि सभी बुद्ध प्रकृति के हैं, सबमें बुद्ध की प्रकृति है। इसका मतलब यह है कि वैकल्पिक प्रकृति सकारात्मक है। इसलिए मैं इस बात से पूरी तरह से राजी हूं कि यदि आप प्रयास करेंगे, यथार्थवादी तरीके से, सिर्फ प्रार्थना के द्वारा नहीं, ध्यान के द्वारा नहीं, बल्कि शिक्षा के द्वारा तो सफलता मिलेगी। वास्तव में आज हम उस पर चर्चा करने वाले हैं। मुझे लगता है कि शिक्षा से दुनिया में बदलाव आ सकता है। तो मौजूदा शिक्षा प्रणाली पर्याप्त नहीं है। मौजूदा शिक्षा प्रणाली मुख्यतः बाह्य मूल्यों को बढ़ावा देती है, आंतरिक मूल्यों को नहीं।

एनडीटीवी : विडंबना यह है कि धर्म के नाम पर बहुत ज्यादा हत्याएं और खूनखराबा हो रहा है। एक आध्यात्मिक गुरु होने के नाते क्या आपको लगता है कि हिंसा को उचित ठहराने क लिए सभी धर्मों में धर्म का गलत स्वरूप पेश किया जा रहा है? क्या आपको लगता है कि किसी भी तरह से पवित्र युद्ध के नाम पर हिंसा को न्यायोचित ठहराया जा सकता है?

परमपावन : नहीं, मुझे लगता है कि ऐसा नहीं है। लेकिन हमें फिर से सोचना होगा। मनुष्य की लड़ाई का इतिहास मानवीय इतिहास का हिस्सा रहा है, जिसमें कभी–कभी धर्म के नाम पर युद्ध भी हुए हैं, लेकिन यह सब अतीत की बात है। सच्चाई केवल महाद्वीप से महाद्वीप तक सीमित नहीं है, बल्कि यह किसी महाद्वीप के भीतर भी देखा जाता है, विभिन्न लोग कुछ हद तक आत्मनिर्भर हैं। आपके अपने पड़ोसी से लड़ाई हो सकती है, अपने पड़ोसी के विनाश को आप अपनी जीत की तरह देख सकते हैं। लेकिन आज की सच्चाई बिल्कुल बदल चुकी है। आपके पड़ोसी का विनाश खुद आपका भी विनाश है, क्योंकि आपका भविष्य उसके ऊपर निर्भर है। आपकी रुचि और उनकी रुचि एक–दूसरे पर पूरी तरह से निर्भर है। वैश्विक स्तर पर देखें तो न केवल देश से देश, बल्कि महाद्वीप से महाद्वीप भी एक–दूसरे पर निर्भर हैं। पूरब को पश्चिम की जरूरत है और पश्चिमी दुनिया को पूरब की। इसी तरह उत्तरी दुनिया को दक्षिणी दुनिया को एक–दूसरे की जरूरत होती है। ऐसा ही है। इसके अलावा तमाम दशाएं, ये सब और मानव की जनसंख्या भी काफी बढ़ रही है। इसलिए अब समय आ गया है। हमें अपने देश, समुदाय के बारे में सोचने की बजाय मानवता के बारे में सोचना चाहिए। हम सब एक सामाजिक प्राणी हैं और कोई भी सामाजिक प्राणी जैसे चींटी, मधुमक्खी यह जरूरी नहीं कि बुद्धिमान हो, लेकिन जैविक रूप से उनमें एक सामुदायिक भावना होती है, वे अपने अस्तित्व के लिए साथ मिलकर काम करते हैं। हम मनुष्यो के पास एक बेहतरीन बुद्धिमत्ता होती है, हमें इस बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल करना चाहिए जिसे आम समझ कहते हैं। हमें गुस्से, घृणा, और अहंकार का दास नहीं बनना चाहिए। इसलिए मैं समझता हूं कि मनुष्य की बुनियादी प्रकृति करुणा, दयामय होना है। इस बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल बुनियादी मानवीय स्वभाव को मजबूत करने में करना चाहिए। यह सवाल अब शिक्षा प्रणाली में उठाना होगा।

एनडीटीवी : जब आप इस्लामिक आतंकवाद जैसे शब्द या म्यांमार के बारे में सुनते हैं, जहां बौद्ध लोग रोहिंग्या मुसलमानों के खिलाफ थे, तो क्या आपको लगता है कि किसी वर्ग या धर्म को आतंकवाद से जोड़ा जा सकता है?

परमपावन : जो लोग धर्म का पालन करते हैं, वे भी इंसान हैं। उनके अंदर भी कुछ नकारात्मक भावनाएं होती हैं। दुनिया बुद्ध को शांति का प्रतीक मानती है, लेकिन कभी कोई बुद्ध भी समस्या खड़ी कर सकता है। इसलिए यह सब धार्मिक मान्यता तो होती है, अच्छी बात है, लेकिन कभी–कभी मानवीय कमजोरी हावी हो जाती है। इस वजह से ही मैं सोचता हूं कि भारत का करीब 2000 साल का दस्तूर धार्मिक सौहार्द् का रहा है। इसलिए वास्तव में हमें सबसे पहले भारतीय परंपरा के इस सार, धार्मिक सौहार्द, को पहचानना होगा। यह न केवल कुछ हद तक अच्छी बात है, बल्कि अब इसे बाकी दुनिया में बढ़ावा देना और साझा करना होगा। इसलिए धार्मिक सौहार्द, यदि हम इसका अध्ययन करें सिर्फ भावना में न रहें और मानवीय बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल इस धर्म के दर्शन के हिसाब से करें तो हम बदलाव देखेंगे। फिर हमारे सामने सवाल आएगा कि विभिन्न दर्शन का उद्देश्य क्या है। सबका एक ही उद्देश्य है, करुणा को बढ़ावा देना, दृढ़निश्चय को आखिर तक दृढ़निश्चय के मूल्यों तक लाना। अब ईश्वर की अवधारणा पर बात करते हैं। ईश्वर ने प्रेम, दया का आविष्कार किया है, इसलिए वह हमारे पिता जैसा है। इस तरह की अवधारणा काफी ताकतवर है। इससे आंतरिक मजबूती आती है और प्रेम के मूल्य के प्रति धारणा मजबूत होती है क्योंकि हमारे पिता ने प्रेम का आविष्कार किया है। इसके बाद अन्य परंपराएं हैं जैसे जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन हैं जिनका कोई सृष्टिकर्ता नहीं है, बल्कि इनका सृजन स्वतः ही हुआ है। यह दृढ़निश्चय कायम करने का एक ताकतवर तरीका भी है। आपके जीवन का भविष्य आप पर

निर्भर करता है। इसलिए आपको अच्छे से व्यवहार करना चाहिए। आप यदि आज छोटी सोच, छोटा दिमाग और नकारात्मक भावनाएं रखेंगे तो इसका नतीजा आपको भुगतना होगा।

एनडीटीवी : परमपावन आपने भारत की महान धार्मिक परंपरा की बात की और यह कहा कि भारत इस मामले में दुनिया में विशिष्ट है कि यहां सभी धार्मिक परंपराएं एक साथ सह–अस्तिव में कायम हैं। लेकिन क्या यह बात आपको परेशान नहीं करती, जब आप भारत में सांप्रदायिक दंगों की वजह से लोगों को लड़ते देखते हैं या कहीं सांप्रदायिक तनाव देखते हैं, यहां तक कि चुनावों पर गौर करें तो आप देखेंगे कि कई राजनीतिक पार्टियां धार्मिक मसले उठाती हैं, जिनसे विभिन्न समुदाय करीब नहीं आ रहे बल्कि उनमें विभाजन बढ़ रहा है? आपका राजनीतिक नेताओं को क्या संदेश है या आप भारत में वैसा होता कब देखेंगे, जैसा आप सोचते हैं? आपको भारत में रहते अब करीब 60 साल हो गए हैं।

परमपावन : जी हां, वास्तव में अब 57 साल हो चुके हैं।

एनडीटीवी : तो आप 60वीं वर्षगांठ के करीब हैं।

परमपावन : निश्चित रूप से आप यह देख सकते हैं कि अक्सर मैं अपने को सबसे पहले प्राचीन भारतीय विचार के एक संदेशवाहक के रूप में देखता हूं। इसके बाद मैं अपने को भारत का एक बेटा समझता हूं। इसकी वजह यह है कि मेरी सभी कोशिकाएं, मैंने यह बात कई दूसरे इंटरव्यू में भी कही है, मेरे दिमाग की प्रत्येक कोशिका भारतीय विचारों से भरी हुई है। कई साल पहले मैने कुछ इंटरव्यू में यह कहा था कि 50 साल साल से भी ज्यादा समय तक यह शरीर भारतीय दाल, चावल, चपाती खाकर जिंदा है। मानसिक रूप से, आध्यात्मिक रूप से, शारीरिक रूप से मैं भारत का बेटा हूं। इसके बाद मैं सोचता हूं कि मैं भारत का सबसे लंबे समय तक रहने वाला मेहमान हूं। इसलिए मुझे इस देश के बारे में गंभीर चिंता होती है। कुल मिलाकर देश के कुछ हिस्सों में कभी यहां तो कभी वहां कुछ समस्याएं होती है। एक मनुष्य होने के नाते मैं लोगों से यह भी कहता हूं कि भारत में एक अरब से ज्यादा जनसंख्या है, यहां कुछ उपद्रवी लोग हो सकते हैं, ऐसा न होता तो भारतीय लोग इंसान नहीं रहते बल्कि भगवान हो जाते। हम सब आखिर मनुष्य हैं। लेकिन कुल मिलाकर अगर मैं इस देश की तस्वीर के बारे में सोचता हूं तो अब भी मेरा मानना है कि यह श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश के मुकाबले ज्यादा शांतिमय और स्थिर है। मेरा मानना है कि यह देश बहुत, बहुत स्थिर और शांतिमय है। भारत अब भी सबसे विशल लोकतांत्रिक देश है और हजार, दो हजार साल पुरानी प्राचीन भारतीय अवधारणा अहिंसा अब भी लोगों के दिमाग में है, यहां तक कि अवचेतन रूप से भी यह अवधारणा है। तो यह मैं समझता हूं कि खुशहाल,
शांतिपूर्ण भारत का असल आधार है और यहां–वहां कभी कुछ अशांति भी हो सकती है, कभी–कभी इसमें कुछ राजनीतिज्ञ, धार्मिक गुरु भी शामिल हो सकते हैं। लेकिन कुल मिलाकर मैं समझता हूं कि भारत की तस्वीर बहुत स्वस्थ है। यह मेरी राय है। लेकिन साथ ही हमें इन अच्छी चीजों के भरोसे नहीं बैठ जाना चाहिए। लोगों के साथ, खासकर आप जैसे युवा पीढ़ी को 21वीं सदी, 22वीं सदी और 23वीं सदी में जागरूकता और दृष्टि के साथ प्रयास करना होगा। मैं समझता हूं कि यह देश अपने करुणा और अहिंसा के द्वारा विश्व शांति में एक बड़ा योगदान कर सकता है।

एनडीटीवी : परमपावन आप भारतीय नेताओं से मिले हैं, इंदिरा गांधी से लेकर वाजपेयी और मोदी तक भारतीय प्रधानमंत्रियों से मिले हैं। क्या उनके साथ आपका संवाद मजेदार रहा है? इन प्रधानमंत्रियों के बारे में आपने क्या चीज गौर की है या देखा है?

परमपावन : अरे हां, जबर्दस्त अनुभव रहा, वे जनता द्वारा चुने जाते हैं। मैं यह समझता था कि पंडित नेहरू अनुभवी नहीं हैं, उनके समय मैं भी काफी युवा था, लेकिन जवाहरलाल नेहरू ने हमारी काफी मदद की और उनसे व्यक्तिगत दोस्ती जैसा रिश्ता रहा, मैंने उनसे काफी उपयोगी और व्यावहारिक सलाह हासिल की।

एनडीटीवी : उस समय भारत के लिए शरणार्थियों को स्वीकार करने का मतलब चीन को बड़ी चुनौती देना था।

परमपावन : जी हां।

एनडीटीवी : बहुत ही कष्ट का समय रहा है?

परमपावन : हां, हां। जब भारत सरकार ने यह सुना कि दलाई लामा ल्हासा छोड़ चुके हैं और भारत की तरफ आ रहे हैं, तब मंत्रिमंडल ने इस पर विचार करना शुरू किया, बाद में कुछ कैबिनेट मंत्रियों और विदेश मंत्रालय के कुछ अधिकारियों ने मुझे बताया कि उस समय क्या हुआ था। कुछ कैबिनेट मंत्रियों ने सचेत करते हुए कहा था कि चीन के साथ रिश्ते खराब हो सकते हैं, लेकिन पंडित नेहरू ने कहा नहीं, हमें दलाई लामा को शरण देनी चाहिए। वाजपेयी जी मेरे सबसे करीबी मित्रों में से हैं। एक बार मैं उनसे मिला और उनसे कहा कि वह विपक्ष में हैं तो अपने विचारों को ज्यादा खुलकर व्यक्त कर सकते हैं। सरकार के लोग थोड़े सचेत होते हैं। मेरी बात सुनकर वह मुस्करा पड़े। इसी तरह मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद मैं समझता हूं कि भारत एक महत्वपूर्ण देश हो गया है।

एनडीटीवी : आपने यह उम्मीद जाहिर की है कि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग तिब्बत के प्रति चीनी नीति में बदलाव लाएंगे, लेकिन ऐसा हुआ नहीं है। जब राष्ट्रपति शी ने सत्ता हासिल की थी तो आप बहुत आशावादी थे कि कुछ संवाद शुरू हो सकता है, लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ है?

परमपावन : पिछले कुछ वर्षों में कुछ मिले–जुले संकेत मिले हैं, जिनमें से कुछ सकारात्मक भी रहे हैं। इसी तरह कुछ अलग

परम पावन दलाई लामा एनडीटीवी संवादों की टेप के दौरान भारतीय और तिब्बती छात्रों के दर्शकों के साथ, नई दिल्ली, भारत अप्रैल 7, 2016

तरह के संकेत भी मिले हैं। इसलिए वास्तव में पूरा तंत्र इस तरह का रहा है कि एक व्यक्ति या दो व्यक्ति इसमें बदलाव नहीं ला सकते। सत्ता प्रतिष्ठानों में कट्टरपंथी लोग हैं, उनकी बड़ी संख्या है, इसलिए शी जिनपिंग को काफी मुश्किल होती है। इसलिए देखते हैं कि आगे क्या होता है। मैं समझता हूं कि जब आपके पास तीसरा नेत्र हो तो ही आप भविष्यवाणी कर सकते हैं, अन्यथा यह बहुत कठिन होता है। यहां तक कि मैं यह सोचता हूं कि जिनके पास तीसरा नेत्र है, वह भी 100 फीसदी शुद्ध नहीं हो सकते। इसलिए बुनियादी रूप से जैसा मैंने पहले कहा है, चीन भी इसी दुनिया का हिस्सा है। एकाधिकारवादी व्यवस्था का इस ग्रह पर लंबा भविष्य नहीं है। लोकतंत्र, खुला समाज, आज़ादी, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, विचार की स्वतंत्रता दुनिया का भविष्य है। इसलिए चीन भी इसी दुनिया का हिस्सा है और बस थोड़े समय की बात है कि हम सब उसी रास्ते पर चलेंगे।

एनडीटीवीः परमपावन आपने काफी भावना के साथ यह बात कही है कि आप भारत के बेटे हैं। लेकिन क्या आपको लगता है कि आप कभी तिब्बत लौट पाएंगे? मैं जानता हूं कि तिब्बत को फिर से देखने की आपकी लंबे समय से आकांक्षा रही है। क्या आपको उम्मीद है?
परमपावनः जी बिल्कुल। मैं अब 80 से ऊपर का हो चुका है, लेकिन आप मेरा चेहरा देखकर अंदाजा लगा सकते हैं कि मैं कितना जिंदा रहूंगा, मैं समझता हूं कि 10 साल और।

एनडीटीवी : परमपावन हम इससे भी ज्यादा समय तक उम्मीद करते हैं।
परमपावन : हो सकता है कि 20 साल और जिंदा रहूं। यह हो सकता है।

एनडीटीवी : परमपावन आपके स्वास्थ्य को लेकर चिंता है क्योंकि आप हाल में मेयो क्लीनिक में भर्ती रहे हैं, लेकिन अब आप काफी युवा और चुस्त दिख रहे हैं, तो अब आपका स्वास्थ्य कैसा है?
परमपावन दलाई लामा : बहुत अच्छा, जबर्दस्त।

एनडीटीवी : यह तो बहुत ही सुखद खबर है। तो अब भी आप यह प्रार्थना करते हैं कि एक दिन तिब्बत लौटकर जाएं?
परमपावनः मैं ऐसा ही समझता हूं, मैं ऐसा समझता हूं। इसकी मुख्य वजह यह है कि सबसे पहले 99 फीसदी तिब्बती मुझ पर भरोसा करते हैं। जब मैं लोगों से मिलता हूं तो उनसे सबसे पहले यही बात कहता हूं कि वे तिब्बत जाकर उनकी हालत देखें। कभी–कभी काफी द्रवित भी हो जाता हूं। कई सर्वेक्षणों के अनुसार चीन में बौद्ध जनसंख्या बढ़ रही है। चार साल पहले एक विश्वविद्यालय द्वारा कराए गए सर्वेक्षण के मुताबिक चीन में करीब 30 करोड़ बौद्ध हैं। तो इस तरह से चीन सबसे ज्यादा बौद्ध जनसंख्या वाले देशों में से हो गया है। तो अक्सर ये बौद्ध लोग और अन्य आम चीनी नागरिक मेरे पास आते हैं। इन दिनों हर हफ्ते कुछ चीनी नागरिक ऐसे होते हैं जो मुझे देखते ही रोने लगते हैं। तो मैं समझता हूं कि दुनिया बदल रही है।

एनडीटीवी : परमपावन आप काफी स्वस्थ दिख रहे हैं, लेकिन हाल के हर इंटरव्यू में आपका जोर अपने उत्तराधिकार के मसले पर रहा है। क्या आप अंतिम दलाई लामा हो सकते हैं?
परमपावन : यह संभव है। मैं इसे गंभीरता से नहीं लेता। जबसे

दलाई लामा की संस्था आई है, अच्छे से काम कर रही है। मैं समझता हूं कि छह शताब्दियों तक यह कारगर रही है। अब 21वीं सदी आ गई है, पुराने समय की कुछ व्यवस्थाएं अब शायद उपयोगी न हों। सबसे पहली बात यह है कि वर्ष 2011 से ही मैं राजनीतिक जिम्मेदारी से पूरी तरह से मुक्त हो गया हूं। हमने राजनीतिक नेतृत्व का चुनाव किया है। वर्ष 2011 में न सिर्फ मैं रिटायर हुआ बल्कि काफी हद तक दलाई लामा संस्था की परंपरा भी। मैंने स्वेच्छा से काफी अधिकार छोड़ दिए।

एनडीटीवी : आज की दुनिया में यह बहुत दुर्लभ बात है परमपावन कि कोई अपने राजनीतिक अधिकार छोड़ दे, इसीलिए तो आप बेहद खास हैं।

परमपावन : यह संस्था राजनीतिक रूप से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं रह गई है। आध्यात्मिक रूप से हो सकती है, लेकिन मैं समझता हूं कि नालंदा परंपरा के बारे में तिब्बत का समृद्ध ज्ञान और दस्तूर किसी एक–दो व्यक्ति या संस्थाओं पर निर्भर नहीं हो सकता, बल्कि यह अध्ययन पर निर्भर होता है। इस देश में ही मैं समझता हूं कि करीब 10,000 भिक्षु कठोरता से अध्ययन कर रहे हैं और उनमें से युवा पीढ़ी के लोग भी हैं जो कि अब अच्छे विद्वान और धर्मपालक हो गए हैं। ज्ञान को संरक्षित रखने का असली तरीका यही है। कई बार मैंने ऐसा मजाक में कहा है, मैं आपसे भी पूछना चाहता हूं कि दलाई लामा की संस्था के पास मंदिर और अध्यात्म दोनों की जिम्मेदारी है, जिसकी शुरुआत 17वीं सदी के आसपास पांचवें दलाई लामा ने की थी, और एक विदेशी दलाई लामा के रूप में मैंने उसका अंत कर दिया, तो क्या पांचवें दलाई लामा इसे पसंद करेंगे या नहीं, मुझे संदेह है। लेकिन चूंकि अब पांचवें दलाई लामा के फिर से प्रकट होने का कोई खतरा नहीं है, इसलिए मैं यह समझता हूं कि अब कोई खतरा नहीं है। इसलिए मैंने पिछले कई वर्षों में दलाई लामा के भविष्य के बारे में सार्वजनिक तौर पर कहना शुरू किया है। जब मेरी उम्र पहले दलाई लामा की तरह 84 साल की हो जाएगी, तो मैं विभिन्न परंपराओं के धार्मिक नेताओं से परामर्श करना शुरू करूंगा। मैंने मंगोलिया सहित कई तरह के संबंधित लोगों से इसकी एक तरह से तैयारी या चर्चा के बारे में बातचीत शुरू कर दी है।

एनडीटीवी : परमपावन, अगले जीवन में आप किस रूप में जन्म लेना चाहेंगे?

परमपावन : पहले दलाई लामा जब 80 साल के हो गए थे, तब उनके कुछ शिष्यों ने कहा (वह खुद तो उच्च्व स्तर के विद्वान थे ही, उनके शिष्य भी उच्च स्तर के विद्वान थे) कि अब तो आप स्वर्ग जाने के लिए तैयार हैं। इस पर दलाई लामा ने कहा कि मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं है। मेरी बस यही इच्छा है कि काफी दर्द, काफी पीड़ा की स्थिति में भी फिर से जन्म लूं, जहां मैं किसी की मदद कर सकूं। मैंने उनकी जीवनी में इसके बारे में पढ़ा है। मुझे यह वास्तव में प्रेरित करने वाला लगा। मैं भी अपनी हर दिन की प्रार्थना और पूजा तब तक करता रहूंगा, जब तक पीड़ा बनी रहेगी, मैं किसी न किसी रूप में लोगों की कुछ मदद, कुछ सेवा करने के लिए बना रहूंगा। यही मेरी आकांक्षा है। किसी भी तरह से मैं इस बारे में निश्चिंत हूं कि अगले जन्म में मुझे लोगों की सेवा करने, कुछ मदद करने का कुछ अवसर मिलेगा ताकि मुझे अपना जीवन सार्थक लगे।

एनडीटीवी : परमपावन आपके पास तो कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि आप अबोध थे, आपको 2 साल की उम्र में दलाई लामा चुन लिया गया था। आप पूरे जीवन इसी रूप में रहे। क्या आपको कभी ऐसा लगता है कि जीवन कुछ अलग होता? क्या आप कभी सोचते हैं कि आप यदि दलाई नहीं होते तो क्या होते?

परमपावन : यह सवाल प्रासंगिक ही नहीं है। मैं दलाई लामा के रूप में पहले ही चुन लिया गया था। तो शुरू से ही आप इस नाम के अनुकूल हो जाते हैं...

एनडीटीवी : एक छोटे बच्चे के रूप में यह कठिन रहा होगा?

परमपावन : इस नाम के साथ ही लोगों में एक प्रकार की जिज्ञासा आ जाती है, किस तरह के दलाई लामा? समय गुजरा, मैं ज्यादा अभ्यस्त हुआ, तब काफी लोगों को यह पता चला कि मैं किस तरह का व्यक्ति हूं। तब मैंने वास्तविक मानवीय संपर्क का फायदा महसूस किया। यह सबसे अच्छा तरीका है, मेरे ख्याल से लोगों में विश्वास कायम करने का। मैं हमेशा कहता रहा हूं कि मुझे कई उपयोगी अनुभव हासिल हुए हैं। एक मनुष्य होने के नाते मैं ये सब अनुभव दूसरे लोगों से साझा कर सकता हूं। मैं यदि खास व्यक्ति बना रहूंगा तो अपने अनुभव दूसरे लोगों से साझा नहीं कर सकता। ऐसा ही है न? हाल में जब मैं मेयो क्लीनिक में था, तो एक डॉक्टर ने पूछा कि आपको किस तरह से संबोधित करूं, तो मैंने उससे कहा कि वह बस मुझे भाई बुलाए। यह ज्यादा आसान है। कई बार लोग मुझे हिज हॉलिनेस (परमपावन) कहते हैं तो कुछ लोग गलती से हिज एक्सीलेंसी या हिज हाईनेस कह देते हैं, यह काफी जटिल है। साधारण है, मुझे बस भाई कहिए।

एनडीटीवी : क्या आप इस बात से संतुष्ट हैं परमपावन, कि इन समूचे वर्षों में तिब्बत की सबसे दृष्टिगत आवाज आप रहे हैं, लेकिन हाल के वर्षों में आपने यह देखा है कि दुनिया की कई शक्तियां चीन को नजरअंदाज नहीं कर पा रहीं, क्योंकि उसकी आर्थिक ताकत काफी बढ़ गई है। आपने वैश्विक ताकतों से यह कहा है कि वे चीन में लोकतंत्र लाने के लिए ज्यादा काम करें, लेकिन ऐसा वास्तव में हुआ नहीं है। मानवाधिकारों को पीछे छोड़ दिया गया है, तिब्बत को पीछे छोड़ दिया गया है, क्योंकि चीन अब ज्यादा से ज्यादा ताकतवर होता जा रहा है। आप तिब्बत के लिए दुनिया और भारत को क्या करते हुए देखना चाहते हैं? आपने खुद मध्यम मार्ग की बात की है, लेकिन मध्यम मार्ग पर तो कोई ध्यान नहीं दे रहा। तिब्बत के मामले में तो सिर्फ चीन के मार्ग पर ही गौर किया जा रहा है।

परमपावन : निश्चित रूप से, सबसे पहली बात तो यह है कि चीन दुनिया का सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश, बहुत प्राचीन देश है। इसके अलावा चीनी जनता बहुत कठोर मेहनत करने वाली, सभ्य जनता है। वहां सरकार समय–समय पर बदलती रहती है, भले ही एक ही कम्युनिस्ट पार्टी का शासन क्यों न हो, लेकिन पिछले 60 वर्षों में मैं समझता हूं कि काफी बदलाव आया है। इसलिए आखिरकार, मैं अक्सर यह कहता हूं, कोई भी देश वहां की जनता का होता है, सरकार या पार्टी का नहीं। तो आप यह देखते हैं कि सरकारें या पार्टी तो बदल जाती हैं, लेकिन लोग वही रहते हैं। इसलिए सबसे ज्यादा जनसंख्या वाले देश के लोगों की बात करें तो मैं वहां के लोगों की सराहना करता हूं। जहां भी मैं चीनी समुदाय के लोगों को देखता हूं, चाहे अमेरिका हो, यूरोप हो या कलकत्ता (जहां वे बड़ी संख्या में रहते हैं), जहां भी वे रहते हैं, अपनी सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखते हैं और कई मामलों में बौद्ध परंपरा को भी। यह कितनी अच्छी बात है, बहुत अच्छी बात है। चीन में इतना ज्यादा सेंसरशिप, इतना ज्यादा भ्रष्टाचार है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग खुद अपनी भूमिका को काफी जटिल पा रहे हैं। मैं उनकी इस बात के लिए सराहना करता हूं कि वे दृढ़ता से इस भ्रष्टाचार का सामना कर रहे हैं, लेकिन अब भी उनके सामने तमाम कठिनाइयां हैं।

एनडीटीवी : परमपावन, तो अब यह एक राजनीतिक मसला बन गया है, भले ही आप न चाहते हों, चीन इतना परेशान है कि उसने यह पुनर्जन्म कानून ब्यूरो ही बना दिया है जो यह तय करेगा कि अगले दलाई लामा कहां जन्म लेंगे, और वे अब कह रहे हैं कि विदेशी जमीन पर बैठे लोग यह नहीं तय कर सकते कि अगले दलाई लामा कौन होंगे। इसलिए यह एक राजनीतिक मसला है और यह सच है कि श्रीमान कि आपने भले ही राजनीतिक नेतृत्व छोड़ दिया हो, आपकी पहुंच राष्ट्रपति ओबामा जैसे वैश्विक नेताओं, रिचर्ड गेरे जैसे सुपर स्टार तक है। आपके दलाई लामा पद से हटने का समूचे तिब्बत आंदोलन के लिए एक बड़ा निहितार्थ होगा। इसलिए यह एक राजनीतिक सवाल बन चुका है, इसलिए चीन अगले दलाई लामा पर अपना नियंत्रण चाहता है।
परमपावन : जी हां।

एनडीटीवी : क्या आपको लगता है कि पुनर्जन्म के लिए कानून हो सकता है ?
परमपावन : चीनी कम्युनिस्ट जिनका कि पुनर्जन्म में कोई विश्वास नहीं है, वे अब दलाई लामा के पुनर्जन्म के बारे में मुझसे ज्यादा चिंतित हैं।

एनडीटीवी : वे यह जानते हैं कि दलाई लामा कितने ताकतवर हो सकते हैं, वे जानते हैं कि यह पद कितनी ताकत वाला है।
परमपावन : यह काफी आश्चर्यजनक है। इसलिए कभी–कभी मैं कहता हूं कि चीन सरकार को पुनर्जन्म के बारे में कुछ सूत्र निकालना चाहिए। सबसे पहले तो चीन को बुद्ध धर्म या प्राचीन आध्यात्मिक अवधारणा, पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार करना चाहिए। इसके बाद कम्युनिस्टों को माओ त्से तुंग के पुनर्जन्म को स्वीकार करना चाहिए, इसके बाद देंग जियोपिंग के पुनर्जन्म को, इसके बाद ही दलाई लामा के पुनर्जन्म के बारे में चिंतित होने की कुछ हद तक वैधानिकता मिल सकती है।

एनडीटीवी : परमपावन, कुछ लोग कह रहे हैं कि आप जब यह कहते हैं कि अगली दलाई लामा एक औरत हो सकती है, लेकिन उसे आकर्षक होना चाहिए तो उनका कहना है कि एक आध्यात्मिक नेता के लिए यह शोभा नहीं देता कि वह कहे कि एक आकर्षक औरत होनी चाहिए। यदि कोई औरत अगली दलाई लामा होती है तो उसे आकर्षक क्यों होना चाहिए? क्या आपने मजाक में ऐसा कहा था?
परमपावन : जी हां, मैंने लोगों को ऐसा कहते सुना है। कुछ लोगों की ऐसी शिकायत रही है, कुछ औरतों ने शिकायत की है।

एनडीटीवी : कुछ मर्दों ने भी शिकायत की है।
परमपावन : जो भी हो यह सच्चाई है, आप लोगों को देखते हैं, आप देखते हैं कि कुछ अच्छे चेहरे के लोग काफी सौंदर्य प्रसाधन लगाकर आते हैं, ऐसा क्यों होता है।

एनडीटीवी : दलाई लामा के रूप में आप तो सौंदर्य प्रसाधन का इस तरह से इस्तेमाल नहीं करते...
परमपावन : बौद्ध साहित्य में यह उल्लेख है कि ज्यादा प्रभावी तरीके से आपके शरीर को दीर्घायु के लिए स्वस्थ होना चाहिए और प्रभावी होना चाहिए, यह भी उल्लेख है कि...

एनडीटीवी : एक जबर्दस्त मुस्कराहट की तरह ही और मुझे यह कहना पड़ेगा परमपावन कि आपका चेहरा मुस्कराहट वाला है...
परमपावन : इसी तरह कई बार मैंने कहा है कि दलाई लामा का पुनर्जन्म ऐसा हो सकता है। मेरे पास इसके लिए वजह है। मानव इतिहास में हजारों साल पहले किसी तरह के नेतृत्व की कोई अवधारणा नहीं थी। जनसंख्या बहुत सीमित थी। इसके बाद धीरे–धीरे मानव जनसंख्या बढ़ने लगी और कृषि प्रणाली विकसित हुई। इसके बाद कई तरह की धारणाएं आईं जैसे मेरी जमीन, मेरी चीज, मेरा सामान। फिर इसकी चोरी करने वाले या अन्य लोग आए और धीरे–धीरे नेतृत्व का विकास हुआ। उस समय के नेतृत्व के पास कोई शिक्षा नहीं थी, शिक्षा का कोई नियम नहीं था, इसलिए नेतृत्व शारीरिक मजबूती के आधार पर तय होता था, इस तरह से पुरुष प्रभुत्व की शुरुआत हुई। कुछ धर्मों में आप सामाजिक सोच का असर भी देख सकते हैं। इसके बाद धीरे–धीरे शिक्षा का विकास हुआ। शिक्षा से ज्यादा समानता आई। तो जैसे भारत में इंदिरा गांधी आईं, उसी तरह से इजरायल और इंग्लैंड में भी नेतृत्व आया। तो आपने देखा कि महिला नेतृत्व, बहुत सक्षम, बहुत बद्धिमान नेतृत्व आया। ◆

चीन ने दलाई लामा के मामले में नीतिगत बदलाव का संकेत दिया

जयदेव रानाडे,
हिंदुस्तान टाइम्स, 5 अप्रैल)

चीन के 12वें राष्ट्रीय पीपल्स कांग्रेस (एनपीसी) के चौथे सत्र के दौरान इस बात का संकेत देखा गया कि दलाई लामा के प्रति बीजिंग की नीति में साफतौर से बदलाव आ रहा है। एनपीसी चीन की संसद है जिसका सत्र 15 मार्च, 2016 को खत्म हुआ है। चीन ने चीनी जन परामर्श सम्मेलन (सीपीपीसीसी) और एनपीसी सत्रों (जिन्हें दो दिग्गज माना जाता है) का इस्तेमाल दलाई लामा और विभिन्न तिब्बती बौद्ध संप्रदायों के बीच खाई पैदा करने के लिए किया ताकि उन्हें कमजोर और अलग–थलग किया जा सके।

दलाई लामा के प्रति चीन के रवैए में बदलाव का संकेत तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र में कम्युनिस्ट पार्टी के उप सचिव पद्मा छोलिंग के बयान से मिलता है। उन्होंने एनपीसी सत्र के दौरान पत्रकारों से कहा, "दलाई लामा ने जब इस देश को चोट पहुंचाई और अपनी जनता को धोखा दिया, तब से वह धर्मगुरु नहीं रह गए। दलाई लामा यदि चीन लौटना चाहते हैं तो उन्हें 'तिब्बत की आज़ादी' की मांग छोड़ देनी चाहिए और सार्वजनिक तौर पर यह स्वीकार करना चाहिए कि तिब्बत और ताइवान चीन का अभिन्न हिस्सा हैं और चीन जनवादी गणतंत्र ही एकमात्र वैधानिक सरकार है।"

छोलिंग की यह टिप्पणी इस हिसाब से महत्वपूर्ण है कि एक विश्लेषक के अनुसार इनसे यह पता चलता है कि "दलाई लामा के एक धार्मिक गुरु के रूप में दर्जे की वैधानिकता अब चीन की केंद्रीय सरकार स्वीकार नहीं कर रही, क्योंकि उसके मुताबिक वह बुद्ध धर्म की विरासत को आगे बढ़ाने और उसके प्रसार के अपने दायित्व को पूरा करने में विफल रहे हैं और अपनी अलगाववादी गतिविधियां जारी रखे हुए हैं।"

यह नीतिगत बदलाव पोलित ब्यूरो की स्थायी समिति की उस घोषणा के अनुरूप ही है, जिसमें वर्ष 2015 में करीब एक हफ्ते तक बंद कमरों के सम्मेलन के बाद यह कहा गया था कि दलाई लामा के पहचान के मामले में अंतिम निर्णय चीन सरकार का ही होगा। चीन की सरकारी समाचार एजेंसी शिनहुआ ने यह दोहराया था कि, "दलाई लामा के बारे में किसी तरह की पुष्टि को चीन की केंद्रीय सरकार की मंजूरी हासिल करनी होगी, जो कि देश की प्रभुसत्ता और राष्ट्रीय सुरक्षा को देखते हुए एक महत्वपूर्ण मसला है।" एशिया न्यूज ने एक अज्ञात स्रोत के हवाले से खबर दी है कि राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने इस सम्मेलन में कहा था, "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अगले दलाई लामा के कार्यकाल को देखेगी। यदि चीजें सही तरीके से नहीं चलीं तो हम जरूरी कदम उठाएंगे।"

हाल की चर्चाओं में जानबूझकर दलाई लामा को अलग–थलग करने की कोशिश की गई है। उदाहरण के लिए तीन चीनी गायक और एक्टर हाल में बोधगया गए थे, दिवंगत 16वें ग्यालवांग कर्मापा की 92वीं जयंती मनाने। लेकिन टीएआर में कम्युनिस्ट पार्टी के उप सचिव वु यिंगजे ने एनपीसी सत्र के दौरान इस मसले को उठाने का निर्णय लिया।

पत्रकारों से बातचीत के दौरान उन्होंने प्रख्यात चीनी गायक फाये वोंग, एक्टर टोनी लिउंग चिउ–वाई और एक्टर हु जुन की इस बात के लिए आलोचना की कि वे इस समारोह में गए।

उन्होंने कहा, "हमें उम्मीद है कि सेलेब्रिटी अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेंगे। हम ऐसे सभी सेलेब्रिटी का सख्त विरोध करते हैं, चाहे वे कितने ही प्रभावशाली क्यों न हों, उनका उद्देश्य जो भी रहा हो, कि उन्होंने 14वें दलाई लामा गुट से से संपर्क किया या उनके विचारों के प्रसार में मदद की।"

गौर करने की बात यह है कि जहां दलाई लामा और उनके 'गुट' पर हमले किए जा रहे हैं, पर्यटकों को उनसे दूर रहने को कहा जा रहा है, वहीं तिब्बती बौद्ध धर्म के कर्मा कार्ग्यू संप्रदाय के प्रमुख ग्यालवा करमापा की किसी भी तरह की आलोचना से बचा जा रहा है। बीजिंग दलाई लामा को नीचा दिखाने की कोशिश कर रहा है और वह उनके तथा अन्य तिब्बती बौद्ध गुरुओं के बीच खाई खोदने की कोशिश में लगा है। ◆

(जयदेव रानाडे, सेंटर फॉर चाइना एनालिसिस ऐंड स्ट्रेटेजी के अध्यक्ष हैं।)

जलयुद्ध : भारत–चीन के रिश्तों को डुबो सकती है एक नदी

जोएल वुथनाउ

(द नेशनल इंटरेस्ट मैगजीन, 19 अप्रैल)

बीजिंग और भारत के बीच रिश्तों की नई परीक्षा होगी ब्रह्मपुत्र

गत 18–19 अप्रैल को चीन एवं भारत के रक्षा मंत्री के बीच बीजिंग में होने वाली मुलाकात का एजेंडा था– सीमा सुरक्षा पर चर्चा करना। इसमें शीर्ष एजेंडा यह था कि सीमा पर स्थिरता में कैसे सुधार किया जाए, जहां दोनों देशों के संप्रभु क्षेत्र के दावे एक–दूसरे का अतिक्रमण करते हैं। समूचे वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीनी सेना द्वारा भारत नियंत्रिण क्षेत्र में अतिक्रमण, सबसे हाल में ऐसा मार्च में देखा गया, बीजिंग और चीन के बीच खासतौर से तनाव का स्रोत रहा है। साथ ही दोनों पक्षों को एलएसी क्षेत्र में एक दूसरे के टकराव बिंदु–जो सुरक्षा सहयोग का संभावित स्रोत हो सकता है–सीमा पार तक बहने वाली ब्रह्मपुत्र नदी को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत से निकलती है (जहां इसे यारलुंग त्सांगपो कहा जाता है) और एलएसी के समानांतर घुमावदार बहते हुए भारतीय राज्य अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है। यह चीन–भारत सीमा के दो सबसे विवादित क्षेत्रों में से है, पहला अक्साई चिन है जो सुदूर पश्चिम में है (जहां सबसे ज्यादा चीनी सैन्य अतिक्रमण हुआ है)। चीनी सेना ने अरुणाचल प्रदेश में एक बड़ा हमला किया था, 1962 में जो दोनों देशों के बीच सीमा विवाद के चलते हुए था। बीजिंग अरुणाचल प्रदेश पर अपना दावा करता है, जिसे वह 'दक्षिण तिब्बत' कहता है, जबकि नई दिल्ली 1914 में हुए एक समझौते के तहत इस पर भारत का वाजिब हक मानता है। तब ब्रह्मपुत्र नदी भारतीय क्षेत्र से होकर बहती थी और आखिरकार बांग्लादेश होते हुए यह बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है।

दुनिया की प्रमुख अंततराष्ट्रीय नदियों में से अगर संस्थागत प्रबंधन की बात करें तो ब्रह्मपुत्र का स्थान सबसे निचली श्रेणी में आता है। उदाहरण के लिए नील नदी के आसपास के देशों ने शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए नील घाटी पहल (एनबीआइ) का गठन किया है। इसी तरह निचले मेकांग क्षेत्र के आसपास स्थित देशों ने मेकॉन्ग नदी आयोग (इसका चीन भी पर्यवेक्षक है, लेकिन पूर्ण सदस्य नहीं) का गठन किया है।

इसके विपरीत ब्रह्मपुत्र के आसपास स्थित तीन प्रमुख देशों चीन, भारत और बांग्लादेश के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए कोई संस्था नहीं है। यहां तक कि द्विपक्षीय स्तर पर भी चीन–भारत का सहयोग

महज नदी आंकड़ों की साझेदारी समझौते तक सीमित है और एक संयुक्त कार्य समूह भी है जो कि नियमित रूप से नहीं मिलता। किसी बड़े समझौते की संभावना (जैसे जल साझेदारी समझौता), इसलिए भी सीमित हो जाती है कि यह नदी विवादित क्षेत्र से होकर गुजरती है।

सुरक्षा के लिहाज से देखें तो बीजिंग और नई दिल्ली के सामने तीन प्रमुख चुनौतियां हैं। मेरे सहकर्मियों सेतु लिमये और निलंथि समरनायके द्वारा सहलेखन की गई एक नई सीएनए स्टडी में विस्तार से चर्चा की गई है और उन्होंने तीनों नदीतटीय देशों के विचारों और नीतियों का आकलन किया है।

सबसे पहली है बाढ़ नियंत्रण और बचाव की चुनौती। जून 2000 में चीन नियंत्रित इलाके वाले ब्रह्मपुत्र में एक प्राकृतिक बांध को तोड़ दिया गया जिसकी वजह से अरुणाचल प्रदेश में भारी बाढ़ आ गई। इस घटना में 30 भारतीय नागरिक मारे गए और 50 हजार लोगों को अपने घरों से विस्थापित होना पड़ा। भारतीय प्रशासन ने यह आरोप लगाया कि चीन ने ऐसी महत्वपूर्ण सूचनाएं छिपाकर रखीं, जिनसे बाढ़ के पूर्वानुमान को बेहतर किया जा सकता था। इसकी वजह से 2002 में एक समझौते की ओर बढ़ा गया जिसके तहत कहा गया कि चीन बाढ़ के मौसम (करीब छह महीने) के दौरान भारत को नदियों के प्रवाह के बारे में आंकड़े देगा। इसके बावजूद बाढ़ एक प्रमुख चिंता बनी हुई है और ग्लोबल वार्मिंग की वजह से तिब्बत की हिमनदियों के पिघलने से परिस्थिति और खराब हो सकती है।

दूसरी चुनौती भारत की यह चिंता है कि चीन अपने यहां इतना विशाल बांध बनाने में सक्षम है जिनसे यारलुंग त्सांगपे नदी की धाराओं को वह भारत की बजाय किसी और दिशा में मोड़ सकता है। इस तरह की चिंता भारत में काफी समय से व्यक्त की जा रही है, खासकर ब्रह्मा चेलानी द्वारा चीन–भारत के बीच संभावित 'जल युद्ध' को लेकर लिखे तमाम लेखों में।

वास्तव में चीनी विद्वानों ने नदियों की जलधाराओं को मोड़ने की तमाम योजनाओं पर विचार किया है, जिनमें मुख्य जोर घरेलू जल संकट को दूर करना है। ऐसे ही एक विद्वान पीएलए के एक वरिष्ठ अधिकारी ने एक किताब लिखी है–'तिब्बत्स वाटर्स कैन सेव चाइना, जिस पर देश और विदेश में काफी लोगों का ध्यान गया है। हालांकि, कई दूसरे चीनी विशेषज्ञों का मानना है कि इसकी लागत काफी ज्यादा आएगी और इस कार्य की चुनौतियों को पूरा करना मौजूदा इंजीनियरिंग के लिए काफी जटिल बात है। इसकी जगह इन विद्वानों का कहना है कि घरेलू जल तंगी को दूर करने के लिए कई दूसरे बेहतर रास्ते भी हैं (जैसे कृषि में सक्षमता को बढ़ाना यानी कम पानी में ज्यादा पैदावार हासिल करना)।

हालांकि, चीनी अधिकारियों ने बार–बार इस बात पर जोर दिया है कि चीन केवल यारलुंग पर रन–ऑफ–द रिवर बांध (पनबिजली वाला ऐसा बांध जिसमें जलाशय बनाने की जरूरत नहीं पड़ती) बना रहा है जिसकी यह क्षमता नहीं है कि नदी जल की धारा मोड़ दे।

लेकिन अनसुलझे सीमा विवाद और चीन–भारत के बीच कम भरोसे को देखते हुए भारत में बहुत कम लोग चीन की सफाई से सहमत दिखते हैं।

तीसरा, चीनी प्रेक्षक इस बात से चिंतित हैं कि भारत अरुणाचल प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी के आसपास पनबिजली और अन्य बुनियादी ढांचा परियोजनाएं बनाने की तैयारी कर रहा है, इसके क्या निहितार्थ हो सकते हैं? चीन को इस बात की आशंका है कि इस तरह के घटनाक्रम से इस इलाके पर भारत का 'वास्तविक नियंत्रण' मजबूत हो सकता है क्योंकि इससे वह 'विवादित क्षेत्र' में बड़े पैमाने पर भारतीय नागरिकों को बसा सकता है। इससे सीमा पर होने वाली बातचीत और जटिल हो सकती है तथा बीजिंग के लिए यह कठिन हो सकता है कि वह फिर से दक्षिण तिब्बत के इलाके को हासिल करे। चीन ने तो ऐसे कदम भी उठाए हैं, जिसके तहत कोशिश की गई है कि अरुणाचल प्रदेश में भारतीय बुनियादी ढांचा विकास को जटिल बनाया जा सके, इसके लिए उसने ऐसी परियोजनाओं की अंतरराष्ट्रीय वित्त पुंजी में भी अड़ंगा लगाने की कोशिश की है। चीनी विशेषज्ञों से बात करने पर यह पता चलता है कि बीजिंग को अब इस बात की उम्मीद बहुत कम है कि वह इस इलाके में भारत की प्रगति को अवरोधित कर पाएगा, हालांकि ये परियोजनाएं चीन–भारत राजनीतिक संबंधों के बीच किरकिरी बनी रह सकती हैं।

कुल मिलाकर कहें तो ब्रह्मपुत्र एक ऐसी मिलीजुली चुनौती पेश करता है, जिससे तनाव और बढ़ सकता है। ऐसे परिदृश्य की कल्पना करना कठिन नहीं है जिसमें नदियों के नियंत्रण को लेकर उलझाव व्यापक सीमा संघर्ष में बदल जाए। आखिरकार जल एक सामरिक संसाधन है और यह क्षेत्र में सैन्य ताकत बनाए रखने के लिए भी महत्वपूर्ण है। लेकिन कई ऐसे रास्ते भी हैं जिनसे दोनों पक्ष साथ मिलकर एलएसी इलाके को स्थिर कर सकते हैं और संयुक्त रूप से नदी मसले का समाधान कर सकते हैं।

कम से कम इतना तो हो सकता है कि चीन और भारत बाढ़ के जोखिम के समाधान के लिए गहराई से मिलकर काम करें। उदाहरण के लिए दोनों सेनाएं किसी बाढ़ की परिस्थिति में मिलजुलकर बचाव कार्य कर सकती हैं। हाल में सीमा क्षेत्र में अभूतपूर्व तरीके से आपदा राहत के लिए दोनों सेनाओं ने संयुक्त सैन्य अभ्यास किया है, बाढ़ राहत से बचाव के लिए भी ऐसा ड्रिल किया जा सकता है।

चीनी और भारतीय नागरिक मंत्रालयों को भी सेनाओं के साथ मिलकर इस बात पर चर्चा करनी चाहिए कि इलाके में बाढ़ नियंत्रण उपायों को कैसे मजबूत किया जा सकता है। नदी सुरक्षा और प्रदूषण नियंत्रण जैसे दूसरे पारस्परिक चिंताओं के बारे में भी जानकारी को साझा किया जा सकता है। हालांकि, इस तरह के सहयोग से दोनों देशों के बीच मौजूद तनाव को दूर नहीं किया जा सकता है, लेकिन इससे कुछ हद तक भरोसा तो कायम किया ही जा सकता है और आपद स्थितियों से निपटने के लिए दोनों पक्षों को मजबूत किया जा सकता है। ◆

(जोएल वुथनाउ, नेशनल डिफेंस यूनिवर्सिटी में सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ चाइनीज मिलिट्री अफेयर्स के रिसर्च फेलो हैं।)